दारिद्र्य दहन शिव स्तोत्र- सम्पूर्ण संस्कृत पाठ

(रचना: महर्षि वशिष्ठ)

श्लोक १

विश्वेश्वराय नरकार्णव तारणाय कणामृताय शशिशेखरधारणाय ।
कर्पूरकान्तिधवलाय जटाधराय दारिद्र्य दुःखदहनाय नमः शिवाय ॥१॥

श्लोक २

गौरीप्रियाय रजनीशकलाधराय कालान्तकाय भुजगाधिपकङ्कणाय ।
गंगाधराय गजराजविमर्दनाय दारिद्र्य दुःखदहनाय नमः शिवाय ॥२॥

श्लोक ३

भक्तिप्रियाय भवरोगभयापहाय उग्राय दुर्गभवसागरतारणाय ।
ज्योतिर्मयाय गुणनामसुनृत्यकाय दारिद्र्य दुःखदहनाय नमः शिवाय ॥३॥

श्लोक ४

चर्मम्बराय शवभस्मविलेपनाय भालेक्षणाय मणिकुण्डलमण्डिताय ।
मंझीरपादयुगलाय जटाधराय दारिद्र्य दुःखदहनाय नमः शिवाय ॥४॥

श्लोक ५

पञ्चाननाय फणिराजविभूषणाय हेमांशुकाय भुवनत्रयमण्डिताय ।
आनन्दभूमिवरदाय तमोमयाय दारिद्र्य दुःखदहनाय नमः शिवाय ॥५॥

श्लोक ६

भानुप्रियाय भवसागरतारणाय कालान्तकाय कमलासनपूजिताय ।
नेत्रत्रयाय शुभलक्षण लक्षिताय दारिद्र्य दुःखदहनाय नमः शिवाय ॥६॥

श्लोक ७

रामप्रियाय रघुनाथवरप्रदाय नागप्रियाय नरकार्णवतारणाय ।
पुण्येषु पुण्यभरिताय सुरार्चिताय दारिद्र्य दुःखदहनाय नमः शिवाय ॥७॥

श्लोक ८

मुक्तेश्वराय फलदाय गणेश्वराय गीतप्रियाय वृषभेश्वरवाहनाय ।
मातङ्गचर्मवसनाय महेश्वराय दारिद्र्य दुःखदहनाय नमः शिवाय ॥८॥

फलश्रुति

वसिष्ठेन कृतं स्तोत्रं सर्वरोगनिवारणं ।
सर्वसंपत्करं शीघ्रं पुत्रपौत्रादिवर्धनम् ।
त्रिसंध्यं यः पठेन्नित्यं स हि स्वर्गमवाप्नुयात् ॥

दारिद्र्य दहन शिव स्तोत्र हिंदी में सरल अर्थ

श्लोक १ का अर्थ

जो सम्पूर्ण विश्व के ईश्वर हैं, जो नरक के भयावह सागर से पार उतारते हैं, जो अमृत का कण स्वरूप हैं, जो अपने मस्तक पर चंद्रमा धारण करते हैं, जिनकी कांति कर्पूर के समान धवल-श्वेत है, जो जटाधारी हैं - ऐसे दरिद्रता और दुखों को भस्म करने वाले भगवान शिव को मेरा नमस्कार है।

श्लोक २ का अर्थ

जो माता गौरी के प्रिय पति हैं, जो अपने मस्तक पर चंद्रकला धारण करते हैं, जो काल के भी महाकाल हैं, जिन्होंने सर्पराज को कंकण की तरह कलाई पर सजाया है, जो गंगाजी को अपनी जटाओं में समेटे हुए हैं, जिन्होंने हाथी के राज का मर्दन किया - ऐसे दरिद्रता और दुखों को नष्ट करने वाले शिवजी को प्रणाम है।

श्लोक ३ का अर्थ

जो भक्ति को सर्वोपरि प्रिय मानते हैं, जो संसार के रोग और भय को नष्ट करते हैं, जो अपने उग्र स्वरूप में इस दुर्गम भवसागर से भक्तों को तारते हैं, जो ज्योति स्वरूप हैं, जो अपने शुभ नामों के कीर्तन और नृत्य में रमते हैं - ऐसे दरिद्रता और दुख को जलाने वाले शिवजी को नमन है।

श्लोक ४ का अर्थ

जो चर्म-वस्त्र धारण करते हैं, जो चिता की भस्म शरीर पर लगाते हैं, जिनके मस्तक में तीसरा नेत्र है, जो मणि के कुंडल से सुसज्जित हैं, जिनके चरणों में पायल छनकती है और जो जटाधारी हैं - ऐसे शिवजी को नमस्कार है जो दरिद्रता को भस्म कर देते हैं।

श्लोक ५ का अर्थ

जो पाँच मुखों वाले हैं, जिन्होंने फणिराज (नाग) को अपना आभूषण बनाया है, जो सोने के समान तेजस्वी हैं, जो तीनों लोकों को सुशोभित करते हैं, जो आनंद की भूमि के वरदाता हैं - ऐसे दरिद्रता-नाशक शिव को प्रणाम है।

श्लोक ६ का अर्थ

जो सूर्य को भी प्रिय हैं, जो भवसागर से तारते हैं, जो काल के भी अंत करने वाले हैं, जिन्हें ब्रह्माजी भी पूजते हैं, जिनके तीन नेत्र हैं और जो शुभ लक्षणों से संपन्न हैं - ऐसे शिवजी को नमस्कार जो दरिद्रता का दहन करते हैं।

श्लोक ७ का अर्थ

जो भगवान राम को प्रिय हैं, जिन्होंने रघुनाथ को वर प्रदान किया, जो नागों को प्रिय हैं, जो नरक-सागर से पार उतारते हैं, जो पुण्य में सर्वाधिक पुण्यमय हैं और जिनकी देवता भी पूजा करते हैं - ऐसे दारिद्र्य-दहन करने वाले शिव को नमस्कार है।

श्लोक ८ का अर्थ

जो मुक्ति के ईश्वर हैं, जो सभी फल देने वाले हैं, जो गणों के अधिपति हैं, जिन्हें गीत और संगीत अत्यंत प्रिय है, जो वृषभ (नंदी) पर सवारी करते हैं, जिन्होंने मतंग ऋषि के हाथी का चर्म धारण किया है, जो महेश्वर हैं - ऐसे दरिद्रता और दुखों को नष्ट करने वाले शिवजी को शत-शत नमस्कार है।

फलश्रुति का अर्थ

महर्षि वशिष्ठ द्वारा रचित यह स्तोत्र समस्त रोगों का नाश करता है। यह शीघ्र ही समस्त संपदा प्रदान करने वाला और पुत्र-पौत्रादि कुल की वृद्धि करने वाला है। जो व्यक्ति प्रतिदिन तीनों संध्याओं (प्रातः, मध्याह्न, सायंकाल) में इसका पाठ करता है, वह स्वर्ग को प्राप्त करता है।

Daridra Dahan Shiv Stotra In English- रोमन लिपि में उच्चारण

Shlok 1

Vishveshvaraya Narakarnava Taranaya Kanamrutaya Shashishekharadharanaya |
Karpurakantidhavalaya Jatadharaya Daridrya Dukhadahanaya Namah Shivaya || 1 ||

Shlok 2

Gauripriyaya Rajanisakaladharaya Kalantakaya Bhujagadhipankankanaya |
Gangadharaya Gajarajavimardanaya Daridrya Dukhadahanaya Namah Shivaya || 2 ||

Shlok 3

Bhaktipriyaya Bhavarogabhayapahaya Ugraya Durgabhavasagarataranaya |
Jyotirmayaya Gunamamasunrityakaya Daridrya Dukhadahanaya Namah Shivaya || 3 ||

Shlok 4

Charmambaraya Shavabhasmavilenanaya Bhalekshanaya Manikundalammanditaya |
Manjhirapada Yugalaya Jatadharaya Daridrya Dukhadahanaya Namah Shivaya || 4 ||

Shlok 5

Pancananaya Phanirajovibhushanaya Hemamshukaya Bhuvanatrayamanditaya |
Anandabhumivara Dayataomayaya Daridrya Dukhadahanaya Namah Shivaya || 5 ||

Shlok 6

Bhanupriyaya Bhavasagarataranaya Kalantakaya Kamalasanapujitaya |
Netratrayaya Shubhalakshana Lakshitaya Daridrya Dukhadahanaya Namah Shivaya || 6 ||

Shlok 7

Ramapriyaya Raghunathavarapradaya Nagapriyaya Narakarnavadaranaya |
Punyeshu Punyabharitaya Surarchitaya Daridrya Dukhadahanaya Namah Shivaya || 7 ||

Shlok 8

Mukteishvaraya Phaladaya Ganaishvaraya Gitapriyaya Vrishabha Eshvarawahanaya |
Matangacharmava Sanaya Maheshvaraya Daridrya Dukhadahanaya Namah Shivaya || 8 ||

Phalashruti

Vasisthena Kritam Stotram Sarvaroganivarnaam |
Sarvasampatkaraam Shighram Putrapaautradivardhanam |
Trisandhyam Yah Pathennityam Sa Hi Svargamavapnuyat ||

Daridra Dahan Mantra In Bengali- সম্পূর্ণ বাংলা পাঠ

শ্লোক ১

বিশ্বেশ্বরায় নরকার্ণব তারণায় কণামৃতায় শশিশেখরধারণায় ।
কর্পূরকান্তিধবলায় জটাধরায় দারিদ্র্য দুঃখদহনায় নমঃ শিবায় ॥১॥

শ্লোক ২

গৌরীপ্রিয়ায় রজনীশকলাধরায় কালান্তকায় ভুজগাধিপকঙ্কণায় ।
গংগাধরায় গজরাজবিমর্দনায় দারিদ্র্য দুঃখদহনায় নমঃ শিবায় ॥২॥

শ্লোক ৩

ভক্তিপ্রিয়ায় ভবরোগভয়াপহায় উগ্রায় দুর্গভবসাগরতারণায় ।
জ্যোতির্ময়ায় গুণনামসুনৃত্যকায় দারিদ্র্য দুঃখদহনায় নমঃ শিবায় ॥৩॥

শ্লোক ৪

চর্মম্বরায় শবভস্মবিলেপনায় ভালেক্ষণায় মণিকুণ্ডলমণ্ডিতায় ।
মঞ্জীরপাদযুগলায় জটাধরায় দারিদ্র্য দুঃখদহনায় নমঃ শিবায় ॥৪॥

শ্লোক ৫

পঞ্চাননায় ফণিরাজবিভূষণায় হেমাংশুকায় ভুবনত্রয়মণ্ডিতায় ।
আনন্দভূমিবরদায় তমোময়ায় দারিদ্র্য দুঃখদহনায় নমঃ শিবায় ॥৫॥

শ্লোক ৬

ভানুপ্রিয়ায় ভবসাগরতারণায় কালান্তকায় কমলাসনপূজিতায় ।
নেত্রত্রয়ায় শুভলক্ষণ লক্ষিতায় দারিদ্র্য দুঃখদহনায় নমঃ শিবায় ॥৬॥

শ্লোক ৭

রামপ্রিয়ায় রঘুনাথবরপ্রদায় নাগপ্রিয়ায় নরকার্ণবতারণায় ।
পুণ্যেষু পুণ্যভরিতায় সুরার্চিতায় দারিদ্র্য দুঃখদহনায় নমঃ শিবায় ॥৭॥

শ্লোক ৮

মুক্তেশ্বরায় ফলদায় গণেশ্বরায় গীতপ্রিয়ায় বৃষভেশ্বরবাহনায় ।
মাতঙ্গচর্মবসনায় মহেশ্বরায় দারিদ্র্য দুঃখদহনায় নমঃ শিবায় ॥৮॥

ফলশ্রুতি

বশিষ্ঠেন কৃতং স্তোত্রং সর্বরোগনিবারণং ।
সর্বসংপত্করং শীঘ্রং পুত্রপৌত্রাদিবর্ধনম্ ।
ত্রিসন্ধ্যং যঃ পঠেন্নিত্যং স হি স্বর্গমবাপ্নুয়াৎ ॥